१ॐ इसिरि

१ॐ नम श्री गुर व उ बाव



ॐ नम श्री सिद्धिलक्ष्मी ॥ श्री ईनवडवाव॥
नमस्के दवद वमि, सिद्धिलक्ष्मी महेजिसा
पर्लं गिनामहा [illegible] देवी, बाछलक्ष्मीनमो.
स्तुते ॥१॥ प्रातिनी सिद्धि इयाव, कद

नीमयमुद्वेणी। सानें कानें कदुवाव
मारुकाकूकं ध्यगम ॥२॥ जगन्नाथ
स्वनीदवी. जग संस्नतनदै दुगाजग
तपुत्ति कनादवी. जगदानन्दको विनी॥

३॥ र्ग लोक्यजननी देवी विद्विव कुसुम
ध्यगम॥ वंद्मामवाष्ठवपंव. वंदुर्वानस
मायुकं॥ ॥ सिद्दिलक्ष्मी महागमनी. वज्रव
गुकरविनी दिमकूंदं दुसंकाम. ३

श्री

दुह्दिधा स न्निता ॥७॥ हर्वख्वा न निर्दवी।
वीलश्चानसतजसा।जर्द्दुसंयुक्ता।
नीलकुंवितमृद्वगा ॥८॥ निर्म्प्रतिमाहव
मा।दनदोर्द्दशुक्षविनी।रवद्धाक्षमसिनंला

वनंधश्मीवदक्लिनी ॥९॥ काद्यंमलंव
वानक्ष्र।जरयामृणुवामकोसब्बाल
क्षानसंयुक्ता।हमनह्लादयँह्लमा ॥१०॥ म्
ह्लावक्ष्यवीधानामदिवानद्वेतासा

सं २

ऽऊर्द्ध्वसमानरदाऽरुद्रं वक्त्र दिकोय
मं ॥ ९ ॥ करवक्कं त्रिनेत्रं श्वरः स्वर्णदृष्टि
गभूष्वनं । चतुर्हस्तामहाऽनीत्रयहस्त
कृतांजलिः ॥ १० ॥ प्रेतासनायविष्णु

वक्रूरवर्णमहाकाला । कोटिवर्णेन्द्रुल
देवी कालन्मार्लिनु नज सा ॥ ११ ॥ नाना
रुपधरादेवी । नानाभरणभूषिता
वद्धुपर्वक्त्रावहम्भुजा । बहुपादं महावला

॥१२॥ विश्वरूपा महामाया । लक्ष्मीरूपं
पाव माता पिनि॥ विन्ताम हि निद्राद्धि
विलिकार्थरुलवृदा॥१३॥ नमश्चसहु
दर्शेषु ऊर्कानवक्षप्रस्कं । ॥१४॥ नम

मा महादेवी मंत्ररूपा वनानिनी॥
१५॥ आधार कुण्डिनादेवी रुद्रकाला
कनिष्ठा सर्वमङ्गला धुवनीमाक जगन्माता
महावितानी॥१६॥ ॐ नमो भगवते वाक्

वृक्षा सुद्धा नवंदिनीः अणिमादि महासिद्धि
सिद्धि सिद्धिप्रदायिनी ॥ २६ ॥ यंवाल्मा वि
संयुक्ता नाक्षत लक्ष्मीप्रदायिनी लक्ष्मीर्वर्द्ध
नदेवी दीपकं पवनमज्वनी ॥ २७ ॥ कृत

त्रयामहन्मनी नवख्यादिगतिद्वयं सक्त
ह्लाषु नवमसकवक्षसमात्रिदेवी ॥ २८ ॥
त्रकादिं महादेवी उष्कान्त्र वायनि नमथान्त्र
मनत्रा महादेवी संक्रमानि महागवरी

॥१९॥ सर्व्वपापविनिर्मुक्ताः ऽक्षपुनानाख्य
वर्द्धिनी। तत्क्षी पुक्ती तव बुद्धीमानः मदोन्म
त्तगजोऽष्व ॥२०॥ सकेसागरवर्प्य
न्तेः तीर्थस्नानं सकहवेनाः सकल्ल्योत्व

ऋषां पार्थिचसूलनां गिवतः ॥२१॥ ह
लोजगदितः हंसो ब्रह्म विष्णु प्रजा
पतः। मारुद्दा पिरुद्दा दे वि ब्रह्मदाकुल
हीनस्य ॥२२॥ नऽष्ट हिंसादि कर्पापे

सकलम्लोकववाव पठत्। त्रिसंध्यं च पतन्लो
ते। मकविरुहमादितव ॥२३॥ विंधना
मृच्यतयावै। निगदस्रूदना निर्वार्ण
वासंकटयन्त्रालि। ताक्रु यत्मीवपठथ

॥२४॥ स्वन्रुथ विघ्नमधावै। सिद्धया
घ्रादि संकटे। विघ्नमगहतेनवक्रो। रुला
य धस्मानकेरुय ॥२५॥ पन्रुमन्त्रादिवु
र्लूबु। स्यनकुलवा विनागयना। कुत्तिके

नाभिदंष्ट्रस्था. विघ्ननासनकं रवे ।
॥२६॥ हृतायस्मानपद्मा दि. व्रतादिना
गनं हंसं ह्रांनवाह्यर्थ कादी नि. नागप्र
ल्प्रवलाधदवि ॥२७॥ त्रिविक्रिता निवार्य

नि. सदात्मस्यरवक्विद्वि । त्रै गम
नीकृया । दु४ रव दा विद्रुमर्द्दनी ॥२८॥
लक्ष्मी स्वनानु विस्थाना. वहद्रोगघना
वहा । महालक्ष्मी र्महाक्रान्ता. सर्व्वसीता

गपदायिनी ॥२९॥ मदिरानन्दवर्त्तिन्या
महाघूर्णितलोचनी ॥ आनंदसमुद्भूता
नि विध्व रवावतारिणी ॥३०॥ ब्राह्मी वै
ष्णवी च कौमारी वैष्णवी दीर्घनासिका ॥

माहेश्वरी चर्म्मकार्त्तिक चर्म्मिका कोष्ठकपाली
॥३१॥ अष्टासिद्धि महासिद्धि सिद्धियो
गिनीमध्यगा ॥ वृत्तयद्धि विद्याकारा
गंधमालादिपुष्पकं ॥३२॥ धूपदीप

सूत्रकर्ण्णंक सूर्य्या वस मायुतं।ज्ञा
ना।षिताजगाहसर्व्वं।र्हौ लौक्रमविपुजि
ता॥३३॥गजाश्वमहिषछाग।गुभव
र्व्वनुद्वदय।ण्यायुप्रवृद्धिं तावाग्गं।
जगाहसर्व्वं सदा हृर्षं॥३४॥बहूनात्र
किमुक्तेन।श्रविक्किता निसिद्धय
ता।श्मरनाहसदादवी।इरवद
विद्वनासिनी॥३५॥नमस्क

स्कु महादेवि॰ नमस्कं विश्वरूपि
णे॰ नमस्कं उग्रतारां॰ सिद्धिलक्ष्मी
नमस्कृत्य ॥ २ ॥ ॐ किन्नासि
षित श्रीस्कं कनाज समाप्ता ॥

१ स्व ॥ नमो गान्धर्वनेश्वरीम
५ गारु वन स्वर्गेनम ॥ ३ जपरुवन
श्वगिकेवष ॥ दिर्घबावा ॥ हेवलगोम
श्वदेवी ॥ जाना धिधा वृकागिता:
स्तुताः स्वच्छिगसफाः ॐ नमिवाम

सायुतं॥ त्रैलोक्यमंगलनाम:कवच
ब्रम्हवेदितं॥ ॥ॐ ४ व नठ वाय॥ य
षि निशृनुवकामि॥ सावधानावधाव
ग्य॥ त्रैलोक्यमंगलनाम॥ कवचमंत्र
वि ग्रहं॥ सिद्धविद्यामयं ग्रवं॥ ऐश्वर्या

सिद्धिप्रदायकं॥ पठनाद्धारणान्मर्त्यं
त्रैलोक्यैश्वर्य्यं लाभवेत॥ त्रैलोक्यमग
लस्यापि॥ कवचस्य प्रजापिजिव॥ छंदो
वि गौ तजगच्छिन्दी॥ देवता रवेवल्लव
पि॥ धर्म्मार्थकाम मोक्षेषु॥ विनियोग

पुष्करिका ॥ ह्रौं विजंम सिवयातु ॥ ह्व
न्मातलाकि ॥ ह्रैं यातुदकल्पतम ॥ ह्रौं
यातुवालीवन ॥ ग्रौं यातुदकुक र्णमधि
वर्णी ह्माम हूँ भवि ॥ बामकर्णसदाया
तु ॥ ह्रैं ह्मुर्ली यातुनमसदा ॥ ह्रौं यातुव

दवि ॥ ह्रैं यातुवह्नतामम ॥ बाकुधियु
नाहिवर्णह्मा ॥ कलु यातुयत्तालिका
॥ ह्रौं स्वभयातुनियतं ॥ ह्रीं तुजांया
तुह्मवदा ॥ क्रौं कलाधियुतं सालि ॥ धि
पुर्णर्वर्णदाविनि ॥ ॥ ज्रौं यातुहद

य ॥ ह्रीँ म न [illegible] द सं सं दा ॥ व नु क्रौँ या नु
वा लि द स सां ॥ लं कु नी रु व न [illegible] वि स
बु ऊ बु प दा. र हे ॥ या नु स ढ्व व गं क
वि ॥ ह्रौँ या नु गु ह्य द गं म ॥ न मा ल ग
व कि क ठी ॥ मा हे [illegible] व नी स दा या नु ॥ ग

रि नि ऊ नु यु ग्ष कं ॥ [illegible] न्न यु र्दु स
दा या नु ॥ ह्मा ह्रा वा नु य द द्व य ॥ सं फ
द सा कं नी यी या ॥ द न्न यु र्दु रि दि लं व
नु ॥ मो च मा या ञ मा का म ॥ बी नु य्य
र्दु स्क न • थ न ॥ सि स्ता स ढु • वा नु ५
न

रिमान्न र्न्हु ले। कायना ॥ का नदुर्ल्पु
गं निस्वाद्द भिद गमहली ॥ जय दुर्गे
घवस्या मा ॥ याद्र मासर्द्व लामुदा ॥ मा
पा विजा दिका र्घ मो ॥ दसा र्न्हु वन्न थम
व ना ॥ थ न क कां दना लास्वा ॥ जय दु
र्गे नलाव द्रु ॥ का न। क्रौं स्व दुर्गे पुन
मापुव र्न्हु ह्लि का यव ॥ गं स्व व क्रो षु
घा ना: थे वा माद ह्वि न व द्रु ॥ म हि स्व मं
द्वि निस्वाद्दो ॥ द्रु या दसा र्न्हु ता वाद्या ॥
ज रंभ द्रु दानी लेव द्रु ॥ सन स्व ती वं

वमश्मानिलयक्लीनुमदद्दर्शीस्वाहातव
टु चक्रनीनिलय॥माभूल्वसदावक्र॥नान
मायाकवरवचारनोतुधहुके:क्रींहृद
महाविद्याद्वादसाणुरिवितप्रदा॥लवि
नाम्नाहिहि४याधा:श्चिकवोवसमा॥

ॐक्रींश्रींहांतनोवाना॥मामुद्वेदगंध
नोवक्र॥विदुंनातंनविभावा॥लुमामा
सर्वदवक्र॥ॐ०तिनकथिनंपुण्य॥गु
वाकमंगनयनं॥सानात्मानकपुन्या
॥महाविद्याद्यविग्रह॥जुस्यायिप०

नामयु ॥ कुवेरविधनेश्वर ॥ १००
द्याध्यासकलं दक्षा ॥ वन्माल्य॰नाद्यमे ॥
स सर्वसिद्धिश्वसस्तु ॥ सर्वश्वध्यमवाप्नुय
॥ पुष्पांजुलाष्टकं दद्या ॥ मूलेनवद्वेय
क्रं ॥ सर्वत्मिनकृतापस्तु ॥ पुनरायाहुत
माकृयात ॥ श्रीकिमलनाथकल्पा ॥ क
मलोनिश्वयाश्रृहे ॥ वानिवनिवसद्रु
क्रु ॥ सत्वसत्वनसंभाप ॥ मोक्षवयति
पुन्या ॥ निर्हं हं क्षमंगलात्रिर्धं ॥ कव
सायियुगवकांवन ॥ सर्वसर्वयपु

ना हस्त्या।। गर्ग तो व्यं विजयी हवंत।। पु
त्र माद दिल्ल वाङ्गीं।। मा विवाम गुजेन
था।। वाहु पुत्र व पीरल्ला।। वं ध्या पितृ
नैष्ठं।। सुरव पुष्पा स्त्रा दिवि सस्त्रा लि
।। [illegible] कुन्ति नं जेन।। कुनलु व वनं [illegible]।। पोल

उं हनं खनि।। दापिघ्व वन मयूराच्छ।। सावि
त्रा भ्रलु मा भुपा।। [illegible] नि वुडजा पतें द
वि ज्ञ वंसं वाद तो तो कम गलं नांक व
चसमाकि।। ।। शुभ।। संवत १२१
प्र जेन वदि १५ लिखितं श्रिव नन
म३

सुन माडु र्म्भीर्य ॥ ६०।१व २८ वावा॥ ६
कु नु द विडवक्षा मि: कवबं सवसि
डुं दं: यठिल्वाभनपिल्वाभ: नतामुच
नसैकल्वाल ॥ दक्षातो कवेदवि: डुक्ष
मन्कुं डुं याजवेल ॥ सनाधूालि दव

नस्य: यु र्व वननकेव जैल ॥ १०: दंगुय
नमन्द वि: कववनकव क थ्यल: तव
नीयंप्रयन्नैन: सावक्षनाउनु वियपी
डमादविजिनयाजु ॥ नताढंउतष
विल्नी ॥ वदुखिरंववनीवाजु ॥ कि र्षु

चलनवासिनी॥सुगंधमालिका
बाहु:वदनं सर्वसाधनि॥जिह्वाच
ंडिकादेवि॥ग्रीवांसारद्रिका
रूपा॥जठरं कदवासिनीर्वना॥
दीवाह्नवजेधानिनि॥कल्याण

महारानी:जगन्माताःस्तनद्वय:
हृदयं ललितादेवि॥उदरं सिद्धवा
सिनि:कटिरंगवतिदेवि:द्वा
वृ विंध्यवासिनि।महावलाह
ऊँरुद्धं पादौ रतलवासिनी:७

वं स्थिता सिद्ध विला: र्ग तान्न वको
माम्भिके: त्रह्म मांसबुज्मनसु ॥ दु
र्ह्मदविनमास्कते ॥ ०ं नू नक्लेवर्ध
दवि: महाविद्याह्लतंवदं: यवं९
ध्रानत्रुस्नाय: सर्वेलिथह्लांतलं९
ममान्यासेल्कवंवंदें ह्ट: नस्यविघुन
क्रुत्रिन ॥ ह्रनत्रेनवि ज्मर्वय्य ॥
ह्पन्नस्येनविद्यंन: नेलवाजेकु
तेवादे: सधन्नविपयीहवेनास
वत्रुजामबाद्यानी: दविवुन्नॐ

वक्लिमा॥ ॥ॐनिश्रीकृतुजिका
तंन्तइर्भ्रंकववसमाके॥ ॥
ॐनमग्रावलिकांपनमःपाबुद्धिक्षि
नबाव॥विनातनगवेलंमःधृविष
गेहदिक्षीगःकस्कपसनसाइगा
हरग्रलरवनस्वदि॥१॥जषदाग
वसंरताःहवितस्वरग्रापियाःनं
दस्वयुग्रीहज्ञाताःमानावेकुनवध
नी॥२॥कंमविद्रावलकर्निःज्र
वानाह्ववकविःमिवातलह्वसं।

ह्लिका: ज्ञाकासवयगमनिनि ।। ३ ।।
वासुदवस्यवतिश्व: दिद्याममापाम
नोहवि: राबावकानलचलः जस्मनं
क्रिसदासुहं ।। ४ ।। नवाता वयतेवी
वा: जानं किनवडुस्मत: नमस्मवेन

दलस्कु: कोंमावीप्रिपदस[illegible] ।।
वालवंमहानोदी: घंथविविकणकं
थि: वहरगंचनुका: वरुदस्मामहस्व
नि ।। ५ ।। कावविक्कतस्यन्य: महाप
वविसीनी: पत्र किकीजपंकस्त्रु:
ना

सं भ्रा विजय वद ॥१॥ कोनवातिम
हानादिः स्कमिनतमिधिपः कवि
र्थिंगजोतेः नवकावनसर्वनौ ॥
८॥ गमिसूर्यसमा लासः विद्दरगो
नोनकूंरतेः मलविश्वानव
वाच्यवागनलविथ ॥९॥ कोनी
कालीमहानादिः सुनोमासवनिधि
पः त्रिसूनभावनिदविः त्रिनत व
नरवनी ॥१०॥ दवदवाद्वितः पूर्व
मास्यावरुदभिः दृग्मणानूपाद्धग

[illegible] न वा [illegible] ॥ ऽवहनाथ

ॐ [illegible] गति ष्ठ विस्मैव ढ

[illegible] ग्रन्नः स्नव दे विष्ठ वि

[illegible] का ॥ २ ॥ ह्रीं ह्रिं मा पुन पृ ना किः स

स स [illegible] व दा मि हिं ः ऽ स्तु वं कु ग ल [illegible] वि

दु[illegible]वचन निर्धुविद्या॥१३॥स्त्रीदण्ड
वाव[illegible]नुक्ष्म महावाहुः सग्रम्यः
[illegible]य [illegible]ः मयसादाविजित्यैः हत्वा॰
कौरववा[illegible]नी॥१४॥ निरस्कंथकक्र
नवाह्ल [illegible] सुस्यायाति हुसहः ००

ईं गुङ्क मकवं लातृ: यु बितृ यायलाला

नि ।।२५।। जूवथ तिनानाहृं: न रुघवि

घ लो बिन: ध्वस्ता लवायुवासयथा: ज

क ... मा स म ह्री क्ति ।।२७।। कस्याहुंसव

कोध्यमि: सोथ००कामियाडूव: पु

धी स्की व कृ त्रमिदं: दि बा स मा हीत

।।२१।। अथ कम न नं हाला: व नी द

घा वि ध न न: गि ह म थ य थ द ह: कु

व वि मि कै नं र वं ।।२८।। हु म थ व थ

द हु: न वं स रो स मिथ य: ग ख्याना

सावयश्चालोः धृवधृतयजायते ॥१९॥
विद्यासूनतयसृर्गः ऽत्नर्त्नथका
दुकं नागानासुवथनीगः ॥ः वृध
मु चैवधनी ॥२०॥ कानवास्यनया॰वं
धाः निल्वविंतमकिंकनोऽस्सूध
चंधैनाकृमुर्कैनानसंगय ॥२१॥
ॐ कि श्रीविनातनगलपुद्विस्ती व
हेवं: श्रीरुवानीलोकृसमाधः ॥२
२॥ नामा ग्राम सुजपापश ॥ कैलासम
हें वं ऽस्क्रुः तुई सूटिकसमनीरं। तन

न तुंविहीन्यहु॰ जनामयुविव र्जितं।
सर्वार्थसंपदाधारैः सर्वज्ञानकृतार्जि
तीः कृताज्ञैत्ताप्तुणहृत्लाः सुखामिन
सदासीवं ।। २ ।। पपुष्पुयनतापुष्माः
गामुच्यामथनीक्षुतधाकृनीयापनद

बस॰ विनापुरुषां मध्यस्हदव तं ।। कम्मबू
द्धिमताद॰ क॰ सौकानाहौ तुकामय पा
।। ।। श्री सदासिवउवाच ।। ३ ।। नुवृद्धं
न्पृवच्छाभि॰ विनायुग्मूनी सर्के म
४ संज्ञा हु४क म्मिल्ला पन्धः चाविर

भुविवार्द्धन४ातस्मिन्नकार्थवधातेः
सलीलांघवतीपु१।कृतान्तरयना।न
र्थ।सकृ१।मरत्युजपेसिवशातस्युसंकर्
नाति।र्थः।न्नाम्मैत्युश्रुद्धातः४।।तमवर्के
र्कोपद्धकेने।।मत्युर्जीनन्नसं।शाय४।।३
नि२

ॐनमोदेवाश्रीदेवसं।सर्वेग्रानह
नाहन।ग्राहिणामधिनाथस्युमत्यु
र्कोयनमोमृतेदेहिनांजीवकृतौ
सि।ङिवस्यकोवनंक्रिशनांनवीवे।।क
दिरा।ह्निमाह्निमाधवानास।सुभा
वानि२

ष्दा ६

यः। इ मन्तुर्द्दे नं। थु णु नी क क ना। ना सः। म्र

सा न्हा नं थ्री कु। सा दं म्लः न कं का न ना। व

ली प्र ना सि तौ का ना घ।। नि न्हं ना पव

को लं न। ल दं वा ऋन मा न्हु सा ७। ग स्वं ब्रो

चू चो र्षं व सि दु वि द्या म ना: स्व थ स

म्हा ५

ध्यां व स वा गु त्रा। स्व था न्हि नी सु गा

वु र्लं।। मा ठु जा व दि ब ना ग स: छ वं ला

जं ञ्ञ मा लं थ। जि ना सं वि न व ध्या ना स

।। ये ध्या प न्हि व ना म लिं। थु जु यु नि न

वा द य ४।। न कं म र्दू वं सं या कि: म्र।। ल

ल पा क्षणा सिवपा ना ः द वा ना ज्ञ सद
सिव ः प्र भन सक्तीस क्रा नों ग्र ॥ स्याव
ध ः ग्र म्य वा पि ः पाव ह्रि ष्ठ मि द द्रिन
ः ि गो मा हला क य ग्र ॥ सो म ज्ञ्या
ग्नि म ग्रस्त ः या म यो पि सदा सिव ः का

म

न ग्र प म हा का वों प्र वृ द्ध वा प्र ख द्धव ः
लिंग म ा ल्ल न सि प्र त्रे ः ग्र रि रु य्य न द वा
स ग्र ॥ यो म्नि ल या म द्र यो पि ः न न सर्व
ग्र न ज सि क्लि नि नां क्ला न ह को सि ः ग्र ॥ जि
न जि वा ज ग प्रा ल था म्ने क्ष लिंं ज ग

ता मुह४काननं सर्वत्रिथनां·मुपाति
नलंमीह्रियाच्य५·सर्वज्ञानयत्नोधक
भसांच्चिजो गम्भुहेसच्चु·म॥नुयाति
नम्वनुय५·यिनुस्कुवदमवववाव
नुर्यगिकनीक्षत·म॥नवक्षवद्धि

वृथासि·सामनु थासियवकाकु·कृमू
कसिवरथासी म॥दैपंकनाविवा
थाना·पन्थानावाथिवाद्वनं॥लैदद
४ह्नायसत्रियं म॥त्वंपुवोधसुमा
क्षन:स्तुवीनदरवनंनपां॥सस्तैय

ॐ स्तुम[illegible] न्म॥ त्वं सोमस्त्वं विनेस
न्म त्वं मा लो पृकृ ति ४ यना । ॐ हृ कि
सल्कलो नाथ॰ न्म॥ सर्वं द्विं पङ्गु नोक्ष
त॰ सर्वं रताङ्गुना ङ्गया । सर्वं द्वान
य ध्यानं दें॰ न्म॥ त्वं मा मोलर्व पृष्णे

॰स्वु ङ्ग स्नाना बपि स्ववनः॥ सर्वांनन्द
मे या श्वन॰ न्म॥ त्वं ॐ कृ॰ सर्वं मङ्गलं
खंकर्डि द्वौं धलदन्ना । ॐ वृध्व धुक त्वं मे वा
रे॰ न्म॥ सर्वं माया कवोक्षवं॰ सर्वा द्वि
पपवांयव॰ सर्वा द्विप ङ्ग न्ना॥ मिलें

म ॥ त्वर्यं जगद्धस्थस्य र्थ ४ शद्ध संस्का
रयवचं वकृद्युकान र्मे नसां: म ॥ वहृ
द्धिभावानां सत्स्त्री: नां हृतुसंकानणम्
रघुनानानवयनीक्किन्नं· म ॥ त्वमनादी
नन्दकश्व· निखानीस्व वितावि नास

स्त्री ह्रं मवदयसं· म ॥ त्वमकानीश
लादवर्ष ४ मकवं हवनकृयं: अति
सक्वानिरवपस्तृ: म ॥ जनेन्द्रकोन्ति
सम्यवन: जननानानसंस्त्रीनं: जन
नानाक्कौसंत्रीगं· म ॥ वक्राय कस्य

र्यान बार्यं बिस्व मनंन्क कं। बिस्य
भ सा बिद्रूर्य स्व्हं म ॥ लं ह्ली २४ पूनमा बि
धा ह्लं ह्लिनं यं न मा ग नि ४॥ ह्लं ह्लिनका
वनेक्रं म्रं म ॥ क्रैं मदी नी वदं दंलो लं:
कर्णिलाकस्य स्वर्द्ध ट८ २ क्लिमक्री येव

दाना म ॥ वृकर्ण नादी यद्र ष स्वं सि
नः यवम ० सिव ४॥ सदा श्री नवपुत्र
नाद्ध म ॥ त्रैसं की र्दं पै धस्क स्
बि ८ वृपन मान स७॥ र ह्ली ग ल भ नि
मा वृक्ष्क नः ग्ह र्ल ब्दं गं लभद्वगा॥

नायं मर्त्त्यं रयं तयं · मृकुकालं वतध
यन । व्या मेधानयचद न · नापस्त्र
रूपं रत्वं न । ऋत्यासननद्वैकाल: ञ
र्गकावर्द्दन्नेकृते ॥ कृत्युर्न्नआयत्यन
स्यं · ताग स्कस्य वि मस्फुलि । यं ऋग्मो
बा
ऋदस म्यां॑ : · यो र्न्नमास्यां म धृति
व । अनमावर्द्दप ध्रमृ' सत व घ अ
जिवतिः ॰ ॐ दं न ह स्य य न मं । द वस्य
हं सपागीन ३ । ह स्व प्र नासनं पच्य
सर्वालीक्ष विनागनं : ञ स्व प्रवं
प

नं नित्यं सर्व्वदुःखनाशनं सर्व्वपा
पविनाशकं शिवलोकं महीयते
अनवधं सशिवं कः पठेत् पीतवृत्ति
निकट श्रीरुद्रमाहेश्वरविधृत भः यथा
मन्त्रः सर्वार्थसिद्धिदं शुभं मृत्युञ्जयेन

उक्तं विनश्यति सकलकिं सं
कटे सकलव्याधिः मृत्युतन्त्र स
सम्पूर्णं ।। श्र ।। ॐ नि ग्रा पवित्र मध्ये वन
मस्तु वन्दे वीर्य निसाहसक मृत्यु
ञ्जय सो प्रसमाप्त ।। ।।श्री
वा

ॐ नमो ह्याव

ॐ नमः श्री लिङ्काय ॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः किर
पिदद विविधप नावीडं वि क्रोवपाडा
कीमा नाकि हिंका मा विव प्र मधमपवीङ्क
बीजमयमानः ॥ बाराहि वाउय क्रीयदनये
यनदान्ह एयमानानकथअङ्गुवामस्फुवापल

ह्रीं हवनमैं नमस्ट्रिनामानवावद्नक
॥१॥ मलूयत्ति बदवखा. विष्टुनजातिन्
हकं४॥ दंविधुत्र सहानजा. मनोवववनाक
मं४॥ मनोदवमनकाय. नकंदंहुजगा
वेनं४॥ ज्वादलूं माहादाकि. त्रिनगग
ननायकं४॥ ज्वंदुमोलाख्दनवंदवि
ॐ

ल॥ कनसाहितं॥ अवर्त्त मारकलाय
हस्वामहस्त [illegible] नयं ७॥ नानायुधवनाद
व। नानागर्भ [illegible] माकुमनं ८॥ नानायज्ञ [illegible] यवी
ताहन। नानाविघ्नविनाशनं ९॥ दक्षसुम
नृत्यानां सिद्धिगं सर्वसविनं १०॥ गतोलाक्षवि
श्नुकदीव। मरवा वट्ठलमा ६ मनाग ११॥ २॥

न

श्रीनी॥ श्रुकसा विप्रीव्रकालनानिंदनि॥ वउर्गु जास्वदु
वक्रावत्तु वंदपनायनी॥ वंतु दुर्गुवध्यापिवउर्गुग
पनायनी॥ हंसयुक्त विमानस्थाम्भोरुप्ती पिनामही॥
दलकंजामालीवनदार्यदानिनी॥ पीतपुष्प
नादेवी पीताङ्गी पीतवस्त्रिनी॥ पिनामहेन हंसुकोपी
नजे मानेरु यनी॥ ङ्कंवलनलावर्णाप्रयागहस्त
काष्ठिनी॥ पूर्वपी ० हिंडिका नित्यंत्र [illegible] किंनमाम्यहं॥

।३॥ माहेश्वरी महादेवी माहेमायानलंजनी। महारु
षस माङ्गला महादुकानना पिनी॥ हिमरूकालि
कादेवी कपाल भजिलोचना। त्रिलोचना त्रिशूलं च
खट्वाङ्ग करकमण्डलु॥ नागमलं कोलेख वां गोदकि
लेनवन्प्रदा। हाह्रीं ह्रीं हिं विनाशार्थं सर्वव्यापि
महेश्वरी॥ श्वेतपुष्पानगादेवी श्वेतांगी श्वेतवा
हिनी। नानाभरणशोभा महाकृत्या तत्कालिवाहिनी॥

श्री रुद्रः देहि जापी ८० माहेश्वरी नमोस्तुते॥४॥ वा
राहे च महारौद्री कौमारी रक्तलोचनी। रक्तवस्त्र
पनी धानां त्रिशूलानवविग्रहा॥ वरुणुजा कालि
लं खिड्गिपात्र धरीशुलान रक्तवस्त्र शिलाग्र कालुद्वो
हत्र नमस्तुते॥ कौमारी पद्माम्भि किमयूरवर
वाहिनी। रक्तपुष्पनमादेवी रक्तांगधारलपेनी॥
रक्तोपहारसंतुष्टा रक्तमांसाव चाप्रियाकोलापू

नीप्रहृष्टवटवृक्षकाननवासिनी॥ श्मशानपीठस्थिता
निशुंभशुंभसोन्मददायिनी॥ हर्षभक्तविनाशकी
मानोवनमोक्षनः॥ ३॥ वज्रकी विष्णुमायावदेहर्षी
निनाशिनी॥ हिंगास्थापवर्णजै यो गजपतिसंस्थिता
॥ मंत्रवचक्रगदाहस्तावज्रवज्रविद्युत्प्रभा॥ नरवस्मवि
चित्रांगीनीनादनेनविभ्रमा॥ हरिसूर्यंवगंधर्व
सेवितानिनयनाश्रिनी॥ सर्वसंपत्प्रदायिनी सिद्धिरूप

णीसंस्थिता॥ जयरामणाकाशवनशालावासिनी
नीस्तुत्यसंस्थितादी २० नानायनीनमोस्तुते॥ ४॥ वाना
लिपानेवकौगीन्वकौमीमहादेवी॥ रुद्रकाली
गंधीनावालाकौरूपाविनी॥ कपालमालिकामा
लाविचित्रभूषणामहिषामहासुरमर्दिनी त्रि
नाशिनश्रूला॥ नीनागभ्रवीरीकपालकः
टिकालतथातांघर्ननावकालमहोतत्त्वल

हषिता ॥ त्रिनत्रं कलिंदहं इष्टदर्पविनाशि
नी ॥ जयन्ती कृतहंस्थाने निम्बदरवासिनी ॥
नागपी० स्थिता नित्यं वाना हीवनमारुतुगे ॥ ११
॥ मङ्क्रमनी मस्माणी कुक्म मारण विग्रहा ॥ १२ न
मनी महादेवी मयीलं कालरूपिणा ॥ वरुडा
विशालाक्षी कूरपञ्चवधाविनी ॥ महावज्रधन
देवी स्थिता नावनागजा ॥ नानापुष्पवनमाद

वीनानानलश्चिलषिता ॥ नानागंध विलिप्ताङ्गी ना
नावस्त्रविभूषिता ॥ चण्डिका या महाकेतु कदम्ब
वृक्षवासिनी ॥ वायुपी० स्थिता नित्यं मङ्क्रमनीन
मस्तुते ॥ १८ ॥ वामरूप आवन्तिका चक्रीवनरूपा
धाविनी ॥ वज्र हिमवत आकी प्रवज्र अर्धेन्दुनाशि
नी ॥ उक्ता कलाल वेदनान क्षं गीन कनाद्भसाः ।
एकपञ्चक महाकेतु नवृक्ष्यान्तवासिनी ॥ पी

८ वी लु न संस्थाने वाम लुं वन माऽस्तु ते ॥८
॥ महालक्ष्मी महादेवी सौ भाग्यस्सन हं दनी॥ वैदू
र्यसहमादेवी हिं हासनस्थ संस्थिता॥ वपुलुंजा
विभलाकौशं खवक्रुनाताधनं नवषवित
सर्वा लीवृजमनिविहषिता॥ विद्विप्रनलेद
षांगीवज्रगंधानलपनी प्रलोक्ष्यापिनीदे
वी सर्वस्थानवनावेन॥ सिद्धिगधर्वनमिता

विद्याधरनरनार्चिता देवी कोटमहापुत्रक्रमः
हानात्कुलागम॥ श्मशाने पीठसंस्थाने महा
लक्ष्मी नमोऽस्तु ते॥१०॥ क्षेत्रसंस्थिता देवी
क्षेत्रदेवताखवासिनी॥ क्षेत्रपालनवसंसक्षेत्रसमाह
नमोऽस्तु ते॥ जननी सर्वभूतानां सर्वसंतापका
रिणी॥ सर्वदा सर्वहिना देवी संसारानपामहुदिनी॥
सर्वमवसर्वश्मक्रलसमवयोगस्वरूपिणी॥ च

मवहुष्टि हंहानी। त्वमवकिगिरुपिनी॥ त्वमे
वमदर्शनियेत्वमवविश्वरुपिनी॥५०॥ हन
महादेवुदेवदेवी महालनमो केनवा लेष॥
लोनेद्रौ घानी॥ त्वमनुरुपिनी॥ नानाअन
मिहादेवी महाकायमहालवः॥ नानाउग्र
रुमाकी लोनानावक्त्रपनेद्मुहे त्रिलोचनी
महामेजो ऋष्मिस्यैत्वमप्रकाशः॥ त्रिवाली

मसमुक्तवदाकाग्निसमगजसात्रिशूलंमनु
स्वक्कामेउमरुनर्जनीमकं॥ पाञ्चि जानेपन
वीनस्वच्छयमोधनेमुहे॥ पाशाकिजधनादे
वावज्जगकिगतधना॥ किपालकेतिकवक
गजयमनीवस्तुनिगहे क्षाकलोलवदनाया
घवमोकनिज तथागासकालनमर्वोगन
गाकिप्रायर्श्रीकिन।जीवजलाधनादवोके

पालमालिकाल्हमः ॥ युजमलिमहानाजाक
पालचद्रहषनं ॥ महासर्वाहनलिवाहय
मानसदाप्रिय ॥ सर्वालकालरमायं ग्राप्राविः
सूनसांलिहा ॥ चतु ४ पी० लिनानियमहदे
त्रीनिवासिनी ॥ ह्रहमहिहिनानियहडकाल
मलाहनः ॥ हडकालेनकालव वीवहडनमा
हुने ॥ ॥ हिलिनां नमर हेवबबनाग्रको

धहेनवः उनहहेन शेवकपालीगेषन
मथो ॥ संहनशेवक्षवहेनवाक्षकन
मोक्षुनाक्षक्षनश्वाधिकानाक्षक्षक्षया
क्षवीथिका ॥ क्षै कार्याप्त वहिन दिक्षाक
नोकदलिका ४ दमदिनं कुत्र पालाक्षकुत्र
पालनमागुना ॥ नाथनाथमहानाथ स्वादिना
थमहात्मने ॥ श्रीनाथ सिद्धिनाथ स्वमानेना

थन माइस्तु ते॥ कृत्र नाथ्य यी थनाथं द्विपनम
थमहाल नमस्तु ते नाथ स्व हर्षे णवकुकना
थनमाइस्तु ते॥ ऊनाथ्य नव नाथ स्व पाउग्
नाथ उदजन॥ सकाविंगकिपङ्क्षाण बगुना
थीनमाइस्तु ते॥ सर्व बां नाथ सिद्धि नासंतानं
कुलवर्द्धनं॥ योगसंघ ऋ थविना॥ कल्याणं स्व
नमोस्तु ते॥ ॥ एककालं द्विकालं वा त्रिका

लं यः पठेन्नरः भनकमा वर्षदय मृत्यु प्रार्थी:
निति द्विमृकुसे॥ नाशय स्वोकविं मालिना
शय द्विघ्न देवकाना॥ नाशय कलहं दौर्गत्य नाशे
यद हिंसावि निमे॥ नाशय कृत्य यदोविद्रः॥ ना
शय द्विप्र सकले॥ नाशय सिविबंधानं ना
शय राजकोपकं॥ नाशय लोक दोषानि ना

भ व सर्वपातकः ॥ स्वरह ना नाथ्य भेक्वर्योध
नभान्यविवर्द्धनं ॥ धर्मार्थ काम भाकाभेउ
मः नेकाय मूकमं: । उद्धृति द्धि भिपलक्ष्मी
विघ्रास नख्न का चिना ॥ वृद्धि प्रज्ञा ह भिप्रंवव
[illegible] दिने ॥ नाकाले मनन नस्यउत्वा
गंनाभये लदाः ॥ सह्वैलोकप्रलभ्यथकिंदीर्घ

त्राय स्वलयुनः ॥ ॥ ॐ भिव्रौपी व्रवस्मन
लोत्रं संपूर्णं ॥ ॥ शुभमस्तु सर्वदा कल्याणं ॥
ॐ नमः श्रीकृष्णाय नमः ॥ मिथ्या नंद के
गीव नारायण की सर्दिर्मलके गीः नंदुगा
विन धान याव न की ५ भुवकी माहे भवी

घा लेंमा वत व स क घा व न कनी ‧ कासि व वा
धा ग्वका ॥ ३ ॥ ना ना न हृ छि थि हृ ह थ न कनी हे गा
ते मा ग्व नी द वनी ः म का हा व पि लं व नी वि न ग
का उ वा ः कनी ः का ग्मा वा द्व ला छि गार विक
नी का गि ॥ २ ॥ मा ग्म न न क नाली थ कु प कनी
थ र्म ग्व नी छ्य कनी ‧ व दु था न व लाम मान
न कनी र्सि ला ख्व न का कनी ः सर्द ल्व र्थि कनी गय
छ्ल कनी का गा ॥ ३ ॥ र्क वा सा व न कं द वा न
य कनी ग्म नी उ मा सं कनी ः र्का ना नी नी ग मार्य
ल्मव कनी ः र्के का व विजया श नी नाद द्वा न व
न न न गा नी का रि थ ॥ ४ ॥ दृ स्या हृ स्य वि रू मा
व कनी वु घा गु कां ग्लु द नी ः ली ला ना त क
श्री २

स म क न रं ग क नी विक्ला न द्वि या क्त वा वि

थे न ख्य म न ग्र मा द न कनी ॥७॥ ड विसद्व ज्ञं

त्ति न द नी मा ना ज्ञ न प र्ण थ्व नी नी त नी त स मा

न कु क न क नी नी व्या न द ा न थ्व नी का गी ॥

सं र्वं न ल ा क नी ल दा स्त्रि व क नी ॥८॥ वा दि

दी नं स म म रु व ज्र्णु न क नी ग ह वा वि ह क

नी र धु सा वा क्ह नी: का ग्मा त्रा दि वृ नं थ्व नी

त्रि व ह नी मि थ्या क्ह नी स र्व क नी · का मा का

कु क ा स ना त्स व क नी का गी ॥ १ ॥ द र्वी स्व

जु वि ग्र स्व स्त्रि ता ं द द्रु क न सं ह्नि गा: वा

मा पा य ल ा ं प र्णु या न्न वि ४ का र्सी ता ग ध म

तें थ्यं नी र क्षा ति ध्रु क नी ह् गा व स क नी

काणी॥ ७॥ चित्रकानन कोटि कोटि वृक्षलि
नानाताक्षुब सुनी वं त्रकानि समानकु
णुनवनी वृक्ष हरिविवाधनी : नानापुस्पका
वास धनी कामकुमधनी ॥ ९ ॥ सर्वप्राणिक
नी मह लयकनि : माना कृपा सिकनी :
साक्षी माकुकनि : निर्भय कनी : वि
स्वामी श्रीधनी : ए कान्धक कनी : नि
र्त्तु मयकनी ॥ १० ॥ अनन्तपूर्ण सदा उ
लसं कलप्राणपद्दै : भन वे नाहृदि
भाव हिलों नन्द हियार्थनि ॥ ११ ॥ ०
कि श्री कनाचार्य वितवृति : अन्नै
भाव कै ममाप ॥ ॥ ६ ॥